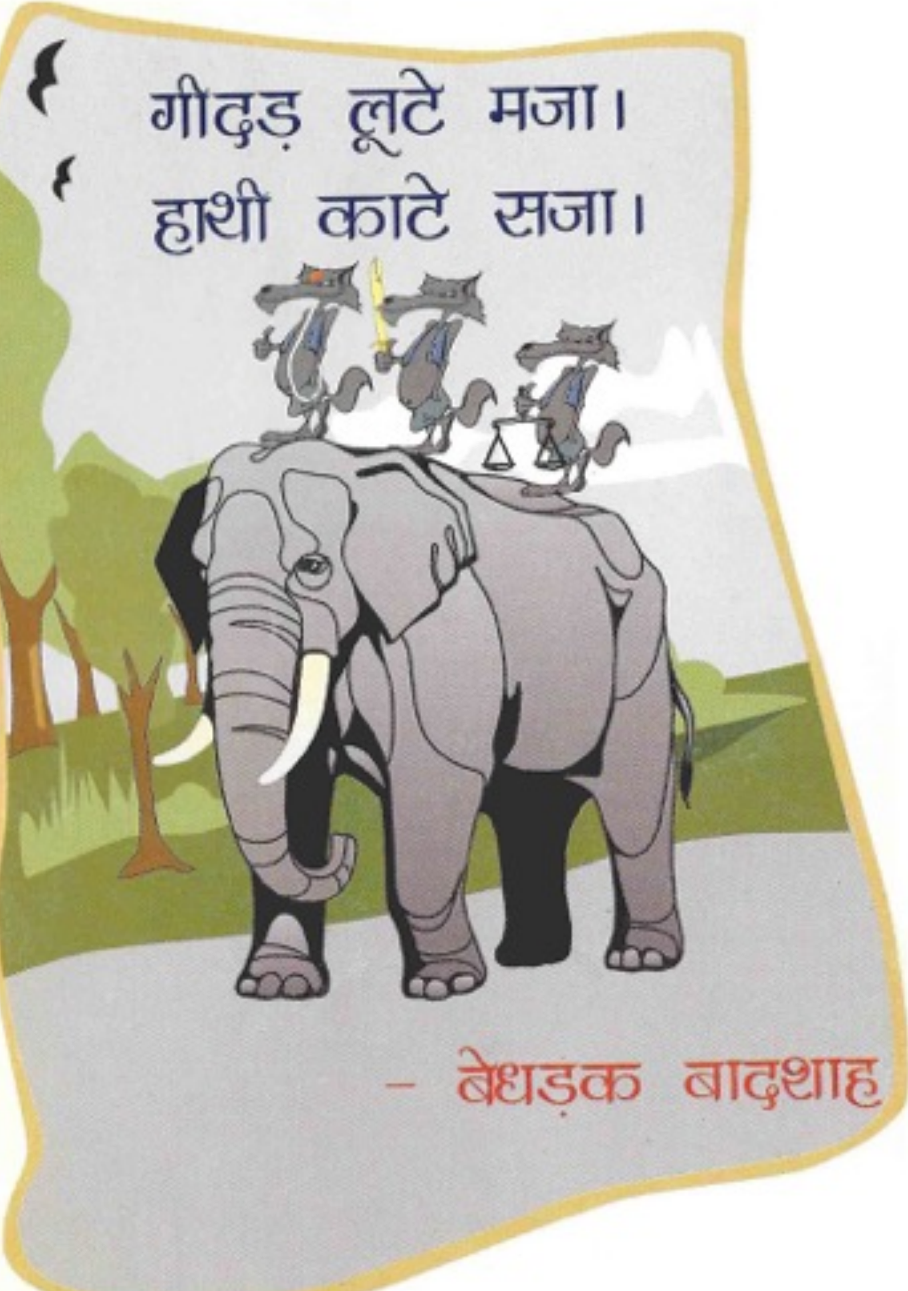
गीदड़ लूटे मजा।
हाथी काटे सजा।
– बेधड़क बादशाह

गीदड़ लूटे मजा,
हाथी काटे सजा।

लेखक -

बेधड़क बादशाह

(मूर्खों और मनुवादियों के लिए नहीं)

समर्पण

यह एक लंबे अन्याय की सच्ची कहानी है जो बहुजन समाज आज भी जीवन में महसूस करता है।

यह उन लोगों को समर्पित है जो “अन्याय की जड़” को समझ गए हैं और इस जड़ को उखाड़ फेंकने के लिए तैयार हैं।

विषय-सूची

(1) हाथी और गीदड़
(2) हाथी का डर
(3) तिलकधारी गीदड़
(4) तलवार धारी गीदड़
(5) तराजू धारी गीदड़
(6) भगवान बुद्ध ने बुद्धि दी
(7) फिर से गुलाम
(8) संतों की सलाह
(9) डॉक्टर अंबेडकर का शीशा
(10) कहानी से सीख
(11) ढोल की पोल
(12) भ्रम का जाल
(13) कथनी करनी में अंतर
(14) मुर्गों की लड़ाई का खेल
(15) संस्कारों का विज्ञान
(16) हिंदू धर्म का प्रसाद
(17) केकड़े की टांग

(18) जहरीले गुप्त षड्यंत्र
(19) दलितों का क्रमिक विनाश
(20) आंख वाले अंधे
(21) मधुमक्खी से सीख
(22) पक्षियों का सुख
(23) परिवर्तन या पतन
(24) क्या करें
(25) चेतावनी

(1) हाथी और गीदड़

गीदड़ एक चालाक परंतु डरपोक जानवर है। वह शरीर से बहुत छोटा और कमजोर होता है। दूसरी और हाथी बहुत ही बड़ा, ताकतवर परंतु सीधा किस्म का जानवर है।

तीन हजार साल पहले हाथी जंगल में शांति से रहता था। बाहर से तीन गीदड़ आए और हाथी पर किसी तरह सवार हो गए। वे हाथी से अपना सब काम करवाने लगे।

(2) हाथी का डर

हाथी को अपनी ताकत का अंदाजा नहीं था। उसे अपना बड़ा शरीर दिखाई भी नहीं देता था। वह गीदड़ों को भी नहीं देख पाता था, बस उनकी आवाज सुनता था। गीदड़ उसके ऊपर बैठे रहते थे तो वह उनको अपने से ज्यादा ताकतवर और बड़ा समझता था। गीदड़ हुकुम चलाते और हाथी उनका कहना मानता था। बस इसी तरह हजारों साल बीत गए। हाथी गुलामों की तरह जीता रहा।

(3) तिलकधारी गीदड़

एक गीदड़ ने अपने माथे पर तिलक लगा रखा था। वह हाथी से कहता कि यह तिलक ही मेरा लक (भाग्य) है। मेरे शरीर में एक धागा बंधा हुआ है जिससे मैं दुनिया को बांध सकता हूं। तुम पेड़ तोड़ो और पत्तियां खाओ और फल मुझे खाने के लिए दो। तुम फल की इच्छा मत रखों। तिलकधारी गीदड़ हाथी को खूब कहानी बना-बनाकर सुनाता था और डराता रहता था। वह कहता कि अगर तुम मेरा कहना नहीं मानोगे तो अगले जन्म में चींटी बनोगे। हाथी बेचारा डर जाता।

(4) तलवार धारी गीदड़

दूसरा गीदड़ एक तलवार अपने हाथ में रखता था। जब भी हाथी कभी सुस्ताने लगता था तो वह तलवार हाथी की पीठ में चुभो देता था। हाथी बेचारा फिर से काम करने लगता था। गीदड़ हाथी से कहता कि अभी तो मैंने एक नाखून ही चुभाया है। अगर मैं अपने चारों पैरों के बीसों नाखून चुभा दूं तो फिर तुम्हारा क्या हाल होगा। हाथी उसके झूठ को सही समझता था। वह सोचता कि तलवार धारी गीदड़ तो पहाड़ के बराबर होगा। इसकी बात सुनने में ही भलाई है।

(5) तराजू धारी गीदड़

तीसरा गीदड़ एक तराजू हाथ में रखता था। हाथी जो भी पेड़-पौधे तोड़ता था, गीदड़ उसमें से अच्छी चीजें निकालकर रख लेता था और बेकार चीजें हाथी को दे देता था। गीदड़ के हिस्से में फल-फूल, रस आदि आते और हाथी के हिस्से में घास-फूस व पत्तियां ही आती थी। तराजू वाला गीदड़ कहता कि तराजू से तौलने पर तुम्हारे हिस्से में ये ही चीजें आती हैं। अगर यह तराजू ना हो तो तुम भूखे मर जाओ। हाथी बेचारा उसकी बात मान कर उन सभी गीदड़ों की बहुत सेवा करता था।

(6) भगवान बुद्ध ने बुद्धि दी

एक बार हाथी जंगल में घूम रहा था तो उसे भगवान बुद्ध मिले। बुद्ध समझ गए कि हाथी की गुलामी और दुख का कारण उसकी अज्ञानता है। उन्होंने हाथी से कहा कि तालाब के पास जाओ और पानी में अपनी परछाई को ध्यान से देखो। हाथी तालाब के पास गया और जब पानी शांत हो गया तो उसने देखा कि उसका शरीर तो बहुत बड़ा है। गीदड़ तो उसके सामने कुछ भी नहीं है। गीदड़ अपनी पोल खुलते देख, वहां से भाग खड़े हुए और हाथी सुख से रहने लगा।

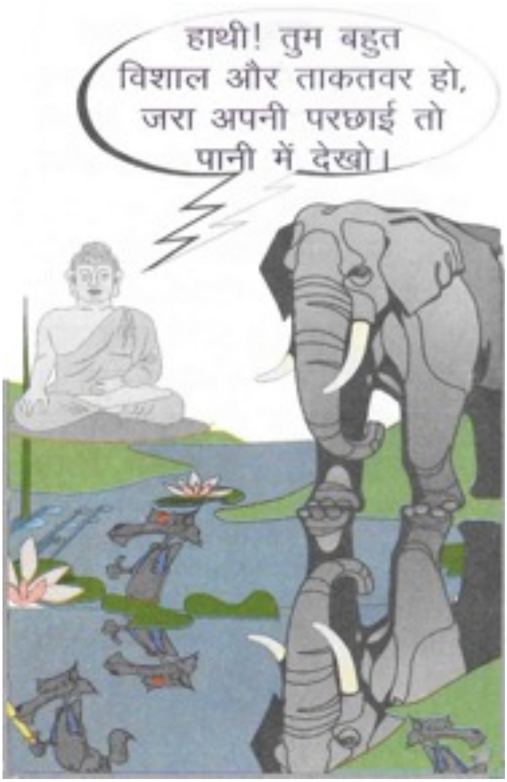

(7) फिर से गुलाम

लगभग एक हजार साल तक सुख से रहने के बाद हाथी की संताने बुद्ध को भूल गई। उन्होंने बुद्धि का इस्तेमाल करना बंद कर दिया। गीदड़ों ने हाथी को फिर से गुलाम बनाने की तरकीब सोची। वे एक के ऊपर एक खड़े होकर हाथी के पास पहुंचे। हाथी ने पूछा कि तुम कौन हो। गीदड़ों ने कहा कि मैं बहुत बड़ा जानवर हूं और जो तुम्हारे सामने है वह तो बस मेरी एक उंगली है। मेरा कहना मानो नहीं तो मैं तुम्हें खा जाऊंगा। हाथी ने फिर से उनकी बातों पर विश्वास कर लिया और गुलाम बन गया।

(8) संतों की सलाह

गीदड़ हाथी पर सवार होकर फिर से उसका शोषण करने लगे। यह देखकर बड़े बड़े संत, महात्माओं जैसे कबीर, रविदास व नानक ने गीदड़ों को समझाने की कोशिश की कि हाथी को परेशान करना ठीक बात नहीं है पर गीदड़ नहीं माने। वे दिन भर कोई काम नहीं करते और मजे करते रहते। सारा काम हाथी को ही करना पड़ता था।

(9) डॉक्टर अंबेडकर का शीशा

जब हाथी गीदड़ों के अत्याचारों से बहुत परेशान हो गया तो डॉक्टर अंबेडकर ने उसकी बहुत मदद की। उन्होंने एक बहुत बड़ा शीशा हाथी के सामने रख दिया। हाथी को फिर से अपनी ताकत का एहसास हुआ और गीदड़ों की औकात पता चली। उसने गीदड़ों को सूंड से

उठाकर जमीन पर पटक दिया। हाथी ने आज फिर चैन की सांस ली है और आजादी से रहने लगा है।

लेकिन गीदड़ों ने भी अभी हिम्मत नहीं हारी है। वे नयी नयी कहानियां बनाकर हाथी को फिर से गुलाम बनाने के चक्कर में हैं। हाथी आजाद तो हो गया पर मन ही मन चिंतित भी था। उसने डॉक्टर अंबेडकर से पूछा कि कहीं मैं फिर से गुलाम तो नहीं हो जाऊंगा। डॉक्टर अंबेडकर ने बतलाया कि तुम गीदड़ों की किसी कहानी पर विश्वास मत करो। स्वर्ग-नर्क, भाग्य-दुर्भाग्य सब झूठ हैं और बहकाने के लिए हैं। तुम बहकावे में मत आओ। अपनी बुद्धि का प्रयोग करो। बुद्ध के दर्शन को अपनाओ।

जिस दिन तुम या तुम्हारी संताने, बुद्धि का प्रयोग करना छोड़ देंगी और भगवान बुद्ध को भूल जायेंगी। उसी दिन तुम फिर से गुलाम हो जाओगे।

(10) कहानी से सीख

जैसे हाथी का वजन गीदड़ों के वजन से 100 गुना ज्यादा होता है और ताकत कई गुना होती है, वैसे ही भारत में बहुजनों की संख्या लगभग 85 % और ब्राह्मणों, क्षत्रियों व वैश्यों की संख्या मात्र 15% है। बहुजनों में दलित (अनुसूचित जाति, जनजाति) व पिछड़ी जाति के लोग आते हैं। बहुजनों का भी हाथी की तरह शोषण हो रहा है। जनसंख्या के हिसाब से 100 पैसों में से 85 पैसे बहुजनों को मिलने चाहिए लेकिन केवल 15 पैसे ही मिल रहे हैं इसलिए अपनी ताकत पहचानो और अपना हक छीनो।

बहुजनों को यह बात जरूर ध्यान में रखनी चाहिए कि केवल जनसंख्या की ताकत पहचानने से ही काम नहीं चलने वाला है। उन्हें उस जाल को पहचानना होगा जिसने उन्हें सदियों से फांस रखा है। यह जाल है-ब्राह्मणवाद या मनुवाद का। ब्राह्मणवाद गीदड़ के रूप में ही नहीं, कई रूपों में मिलता है।

ब्राह्मणवाद ढोल की तरह बजने वाला परंतु खोखला है। यह मकड़ी के जाल की तरह आसानी से नहीं दिखाई देता पर निर्दोषों को फांस लेता है। यह फूट डालकर राज करता है। यह केकड़ा नीति वाला है।

(11) ढोल की पोल

ढोल को बजाने पर वह बहुत आवाज करता है, पर अंदर से खोखला होता है। इसी प्रकार से जो बादल जोर से गरजता है वह बरसता नहीं है। यही हाल तीन मुट्ठी आर्यों (ब्राह्मण, ठाकुर व बनिया) का भी है। वे अपनी कम जनसंख्या की कमजोरी समझते हैं इसीलिए वे तरह-तरह के हथकंडे अपना कर बहुजनों को फंसाए रखते हैं। अब इनका झूठ व खोखलापन खुल गया है जो इस प्रकार है-

(1) आर्य बहुजनों से ज्यादा योग्य हैं, यह कहना झूठ है। बाल्मीकि ने रामायण लिखी, वेदव्यास ने महाभारत लिखा। भारत में संविधान लिखने के लिए डॉक्टर अंबेडकर से ज्यादा योग्य आदमी ही नहीं मिला। ये तीनों ही दलित थे आर्य नहीं।

(2) जातियां जन्म से होती हैं, यह कहना झूठ है। असलियत में सभी मनुष्य समान होते हैं। उनमें जन्मजात कोई फर्क नहीं होता। सारे फर्क बाद में

जरा पहचानिए, कौन सा बच्चा कौन सी जाति का है।

पैदा किए जाते हैं। अस्पताल में पैदा हुए सारे बच्चों को अगर एक जगह रख दिया जाए तो कोई भी पहचान नहीं सकेगा कि कौन सा बच्चा ब्राह्मण का है और कौन सा शूद्र का। अगर अंतर जन्मजात होता तो ब्राह्मण का बच्चा तिलक-जनेऊ के साथ पैदा होता, क्षत्रिय का बच्चा तीर-कमान के साथ, वैश्य का तराजू के साथ और शूद्र का झाडू के साथ पर ऐसा नहीं होता।

(3) हिंदू धर्म को धर्म कहना ही झूठ है। हिंदू धर्म एक संतरे की तरह है जो बाहर से एक दिखाई देता है पर अंदर से फांकों की तरह अलग अलग है। संतरे की प्रत्येक फांक एक जाति की तरह है। ऊपर से हिंदू

हिन्दु धर्म की जातियाँ सन्तरे की फाँको की तरह हमेशा अलग अलग रहती हैं।

धर्म का कड़वा छिलका फांकों को एक किये रहता है। छिलका उतारने पर ही फांकें बिखर जाती हैं। अतः हिंदू धर्म, धर्म नहीं कटुता पैदा करने वाला छिलका है। दूसरी ओर ईसाई और इस्लाम धर्म अमरुद की तरह हैं जिसमें छिलका, गूदा और बीज आपस में मजबूती से मिले रहते हैं। अमरुद एकता का प्रतीक है। एकता के कारण ही अंग्रेजों और मुसलमानों की संख्या विश्व में सबसे ज्यादा है।

(4) दलित हिंदू हैं यह कहना झूठ है। असलियत में सवर्ण ही हिंदू हैं। दलित तो बस आबादी बड़ी दिखाने के लिए ही हिंदू हैं। दलित उस हवा की तरह हैं जो बस गुब्बारे (सवर्ण) को फुलाने के लिए इस्तेमाल की जाती है। गुब्बारे को सब जानते हैं पर हवा को कोई पूछता भी नहीं है। ऐसे ही सवर्ण ही सब कुछ है, दलितों को कोई पूछता भी नहीं है। सवर्ण, दलितों को हिंदू

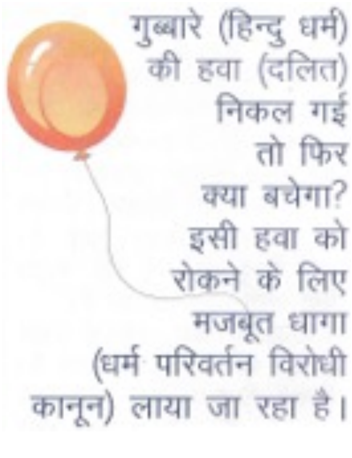

धर्म में ही बनाए रखना चाहते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि दलितों द्वारा धर्म परिवर्तन से उनकी हवा ही निकल जाएगी।

(5) हिंदू सहनशील हैं यह कहना झूठ है। हिंदू बिल्कुल भी सहनशील नहीं है। वे दलितों के लिए क्रूर व हत्यारे हैं पर मुसलमान और अंग्रेज शासकों के पैर चाटने वाले हैं। जगजीवन राम जैसे बड़े राजनेता ने जब बनारस में एक मूर्ति का उद्घाटन किया तो उसे गंगाजल से धोकर शुद्ध किया गया। मुसलमान शासकों को अपनी बहू बेटियां दे दी पर गरीब मुसलमानों का कत्लेआम कर दिया। हरियाणा में जानवरों के लिए आदमियों को पीट पीटकर मार डाला। गोवा में ब्राह्मणों ने मतलब (सत्ता) के लिए ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया।

(6) ब्राह्मण, क्षत्रीय और वैश्य को सवर्ण कहना झूठ है। ये वास्तव में कुवर्ण है। इनके कुकर्मों के अनुसार इनका सच्चा नाम कुवर्ण है एक कहावत है- सवर्ण बहुत सताने वाला,
बाहर गोरा, भीतर काला।

(12) भ्रम का जाल

अगर जनता का खून चूसा जाए तो जनता को गुस्सा आएगा और वह क्रांति कर देगी। क्रांति रोकने का उपाय है कि जनता को भ्रम में रखा जाए, उसे गुमराह कर दिया जाए ताकि उसे पता ही ना चले कि कौन खून चूस रहा है। जब पता ही नहीं चलेगा तो जनता क्रांति किसके विरुद्ध करेगी। यही तरकीब ब्राह्मणों ने सदियों से अपना रखी है।

ब्राह्मण शब्द का विकास भ्रामन शब्द से हुआ है, जिसका मतलब है भ्रम फैलाने वाला व्यक्ति। ब्राह्मण (भ्रामन) दो-मुखी या तीन-मुखी बातें करते रहते हैं जो अलग-अलग किस्म की होती हैं और दुनिया में भ्रम

फैलाते रहते हैं। भ्रामनों द्वारा फैलाए गए भ्रम के जाल इस प्रकार से हैं-

(1) **संसार झूठ है और ब्रह्म सच है-** यह कहना ही सबसे बड़ा धर्म भ्रम है। यह तो वही बात हुई कि हम दिनभर जो देखते हैं वह तो भ्रम है और रात में जो सपने में देखते हैं वह सच है। अगर संसार झूठ है तो सवर्ण दलित-पिछड़ों के आरक्षण से क्यों जलते हैं। उनको झूठ का आनंद क्यों नहीं उठाने देते। इससे सिद्ध होता है कि संसार सच है परंतु सीधे-सादे दलितों को भ्रम में डालने के लिए संसार को झूठ बताया गया है। जिससे दलित अपने दुख को झूठ समझें और विद्रोह ना करें।

(2) **दलितों को शूद्र कहना भ्रम फैलाना है।** शूद्र शब्द छुद्र से बना है जिसका मतलब है छोटा। शूद्र हिंदू आबादी का 85 प्रतिशत है अतः उनको शूद्र (छोटा) नाम से नहीं बल्कि वृहत या दीर्घ (बड़ा) नाम से पुकारा जाना चाहिए। इतनी बड़ी आबादी का नाम शूद्र इसलिए रखा गया है जिससे कि वे भ्रम में रहें,

हीन भावना से ग्रस्त रहें और उन्हें अपनी ताकत का अंदाजा न हो सके।

(3) **असुर को बुरा कहना भ्रम फैलाना है।** आक्रमणकारी आर्य ठंडे प्रदेशों (मध्य एशिया) से भारत में आए थे और सुरा यानी कि शराब का खूब सेवन करते थे इसीलिए उनके मुखिया सुर कहलाए जैसे इंद्र आदि। शराब पीने के कारण सुर दुराचारी भी होते थे और किसी भी औरत की इज्जत पर हाथ डाल देते थे। दूसरी और भारत के मूल निवासी सुरा का सेवन नहीं करते थे और सदाचारी होते थे इसलिए उनको असुर कहा जाता था। आर्यों ने अपने ग्रंथों में असुरों के बारे में गलत बातें लिखकर उन्हें फालतू में बदनाम कर दिया।

(4) **राक्षस को बुरा कहना भ्रम फैलाना है।** राक्षस वनों और पशु पक्षियों की रक्षा करने वाले को कहा जाता था। यह आदिवासी ही होते थे। आर्य ठंडे प्रदेशों से भारत में आए थे और शिकारी प्रवृत्ति के थे। उनका स्वभाव शिकार को आग में भून कर खाने का था। भारत में गर्मी थी लेकिन आर्यों ने

अपना स्वभाव नहीं छोड़ा। आग में शिकार भूनने को उन्होंने यज्ञ का नाम दे दिया। यह यज्ञ के नाम पर तमाम जानवरों की बलि चढ़ाते थे और घी, मेंवे व लकड़ी आग में डालकर नष्ट कर देते थे। यज्ञ के धुएं से प्रदूषण फैलता था। राक्षस (आदिवासी) यज्ञों में होने वाली बर्बादी का विरोध करते थे इसलिए आर्यों ने राक्षसों से युद्ध शुरू कर दिया और अपने ग्रंथों में उनके खिलाफ गलत सलत लिख दिया।

(5) **आर्य समाज, राधास्वामी व सांईं बाबा के मत भ्रम फैलाने के लिए हैं।** ये लोग हिंदू धर्म की असमानतावादी वर्ण व्यवस्था पर चोट नहीं करते। ये अंधविश्वास के खिलाफ थोड़ा बहुत सुधार लाने की बात करते हैं। ये हिंदू धर्म के बदसूरत चेहरे को क्रीम पाउडर की तरह छिपाने की कोशिश करते हैं जिससे दलित हिंदू धर्म में ही उलझे रहें।

(6) **शहरों में जाति प्रथा खत्म हो गई है यह कहना एक भ्रम है।** आजकल दलित तरह-तरह के टाइटिल लगाकर अपनी जाति छिपा लेते हैं। इसी

कारण उनको शहरों में किराए के मकान मिल जाते हैं। होटलों तथा मंदिरों में भेदभाव महसूस नहीं होता है। अगर वे अपनी जाति का लेबल अपने माथे पर लगाकर चलें तो उन्हें कहीं भी इज्जत ना मिले।

(7) **यज्ञ से इच्छा पूरी होती है और वातावरण साफ होता है, यह कहना भ्रम है।** यज्ञ से कोई फायदा नहीं होता बल्कि नुकसान ही होता है। यज्ञ से धुंआ निकलता है जिससे सांस की बीमारी हो जाती है। यज्ञ में पैसों की बर्बादी होती है। एक यज्ञ में एक घंटे में एक टिन घी जलकर राख हो जाता है। इसी घी को आम आदमी 6 महीने तक खा सकता है। आजकल बच्चा भी जानता है कि चीजों को जलाने से प्रदूषण

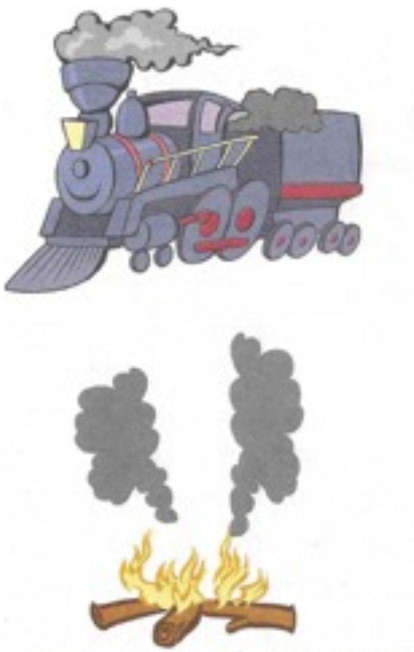

गाड़ी का धुँआ हो या यज्ञ का, दोंनों प्रदूषण फैलाते हैं।

फैलता है। यज्ञ से केवल एक आदमी को ही फायदा होता है, वह है ब्राह्मण जोकि दान-दक्षिणा पाता है।

(8) **देवी देवताओं का डर एक भ्रम है।** देवी देवता काल्पनिक होते हैं और उनका डर झूठा और मनोवैज्ञानिक होता है। बचपन से ही टेलीविजन और फिल्मों में देवी देवताओं की शक्ति देखते-देखते दिमाग के अंदर एक डर सा बैठ जाता है। अगर देवी देवताओं में ताकत होती तो वे हमेशा भारतवासियों की रक्षा करते और भारत कभी भी मुसलमानों या अंग्रेजों का गुलाम ना बनता। ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिए देवी-देवताओं की झूठी कहानियां गढ़ी हैं।। जैसे कठपुतलियों को बनाने व नचाने वाला नजर नहीं आता है वैसे ही देवी

असली फायदा किसका होगा?

देवताओं की कहानी बनाने वाला यानी कि ब्राह्मण नजर नहीं आता है। वह पर्दे के पीछे चुपचाप काम करता है।

(9) **भाग्यवाद एक बहुत बड़ा भ्रम है।** भाग्यवाद के कारण भारत दुनिया में सबसे ज्यादा फिसड्डी देश है। ब्राह्मण उस धोखेबाज व्यापारी की तरह है जो माल तो अपना बनाता है पर मोहर किसी और की लगाता है। ब्राह्मण शोषण खुद करता है और उन पर मोहर भगवान की लगाता है। भगवान के नाम से कोई विरोध नहीं करता। ब्राह्मणों के पास निम्न प्रकार की मोहरें हैं-

(1) भगवान की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता है। (यानी कि सब अपराध भी भगवान की मर्जी से ही होते हैं)

(2) भगवान जो कुछ भी करता है, सही करता है। (यानी कि आपके घर में यदि चोरी हो गई है तो वह भगवान की मर्जी से हुई है और सही हुई है)

(3) होनी को कोई नहीं टाल सकता। सब कुछ ऊपर से ही लिखकर आता है। (मतलब कि चीन और

पाकिस्तान की सीमा से सेना हटा लेनी चाहिए क्योंकि हार जीत तो ऊपर से ही लिखकर आई होगी इसलिए सेना पर खर्च करने से क्या फायदा)

(4) जो भाग्य में लिखा होता है, वही होता है। भाग्य का लिखा मिटाया नहीं जा सकता। (यानी कि गरीब की मेहनत की कमाई छीनकर कहा जाता है कि ये तो तुम्हारे भाग्य में लिखा है। गरीब बेचारा भाग्य के नाम से चुप रहता है)

(5) जाको राखे साइयां, मार सके ना कोई। (यानी कि जिसको मरना है उसे कोई नहीं बचा सकता और जिसे बचना है उसे कोई नहीं मार सकता इसलिए इलाज कराने से कोई फायदा नहीं होगा और सारे अस्पताल बंद कर देने चाहिए)

(6) कर्म करो पर फल की इच्छा मत करो। (यानी कि अगर खेत में गेहूं बोओगे तो जरूरी नहीं कि गेहूं ही उगे, गेहूं की जगह चना भी उग सकता है)

(7) भगवान के घर में देर है पर अंधेर नहीं। (यानी कि कोई अगर विद्रोह पर उतर आए तो उसे यह कह कर टाल दो)

(8) समय से पहले और किस्मत से ज्यादा कभी नहीं मिलता है।(यानी कि तुरंत अपनी मेहनत का फल मत मांगो और जितना मिल जाए, उतने में ही संतोष करो)

(9) शराब बुरी है ना कि गम भुलाने की दवा। (शराब ब्राह्मणवादी व्यवस्था को बनाए रखने में मदद करती है। शराब पीने के बाद आदमी (दलित) सोचना बंद कर देता है। उसकी बुद्धि जानवरों की बुद्धि की तरह हो जाती है क्योंकि जानवर भी नहीं सोचता। उसे गुलाम बने रहना बुरा नहीं लगता। सरकार भी ब्राह्मणवादियों की है इसलिए जगह-जगह शराब

शराब में डूबोगे तो परिवार भी डूबेगा,
पीकर वोट दोगे तो दुश्मन ही जीतेगा।

की दुकान खोलती है। फिल्मों में भी शराब का प्रचार कराया जाता है, हांलाकि आजकल उस पर बैन लग गया है। शराब पीना दलितों के लिए बुरा है क्योंकि शराब पीकर वह अपने बीवी बच्चों को पीटता है। शराब ना पीना ब्राह्मणवादियों के लिए बुरा है क्योंकि शराब न पीने से दलित बुद्धिमान हो जाएगा और ब्राह्मणवादियों की बात नहीं मानेगा)

(10) अंतर्जातीय विवाह मतलब के लिए होते हैं ना कि सामाजिक सोच बदलने के कारण। (ब्राह्मणों को अगर सिविल सेवा का दलित अधिकारी मिल जाए तो दौड़कर अपनी लड़की का विवाह उससे कर देते हैं। लेकिन अगर बेरोजगार दलित युवक उनकी लड़की से प्रेम विवाह करना चाहे तो उसकी जान के पीछे पड़ जाते हैं इसलिए अंतर्जातीय विवाह मतलब के लिए हो रहे हैं)

(11) शादी की जोड़ियां ऊपर से बन कर आती हैं यानी कि भगवान बनाता है। (पर भगवान सारी

जोड़ियां एक ही जाति में क्यों बनाता है, क्या भगवान जातिवादी है? वास्तव में, ये सारा काम भगवान के नाम पर ब्राह्मणों द्वारा ही किया जाता है और जाति व्यवस्था को बरकरार रखने के लिए किया जाता है जिससे कि उनका उल्लू सीधा होता रहे)

(12) मंदिर फायदे के लिए नहीं बल्कि ब्राह्मणों के रोजगार के लिए होता है। (गरीबों का मंदिर जाने से कोई फायदा नहीं होता क्योंकि गरीब और गरीब होता जा रहा है। मंदिर से ब्राह्मणों को बैठे-बैठे लाखों करोड़ों की आमदनी होती है। उन्हें ना तो कोई फाइल देखनी होती है और ना ही खेत में कोई मेहनत करनी होती है। कितनी बढ़िया नौकरी है इसलिए ब्राम्हण इस नौकरी में किसी और को घुसने ही नहीं देता है। आज भी मंदिरों में करोड़ों अरबों रुपए का सोना भरा पड़ा है जिससे अगर चाहें तो देश का कर्ज उतर सकता है पर ऐसा नहीं किया जाता)

(13) कथनी करनी में अंतर

ब्राह्मणवादी कहते कुछ और हैं, करते कुछ और हैं, जैसे कि-

(1) गाय को मां कहना पर मां के बराबर इज्जत नहीं देना। ब्राह्मणवादी गाय को मां मानते हैं पर उसे बिना कोई वस्त्र पहनाये सड़क पर खुला छोड़ देते हैं जोकि घोर अपमानजनक है। या तो उसे मां ना माने पर यदि माने तो इज्जत भी दें। उसे कमरे में रखें, उसका शरीर कपड़े से ढकें और अच्छा खाने को दें।

(2) एक ओर औरतों को देवी कहना और दूसरी ओर दहेज के नाम पर उनको जिंदा जला देना। पूरी दुनिया में केवल हिंदू धर्म में औरतें जिंदा जलाई जाती हैं। यहीं पर उनको देवी मानकर उनकी पूजा का ढोंग भी किया जाता है।

(3) वसुधैव कुटुंबकम का ढोल पीटना यानी कि संसार को एक परिवार मानना लेकिन अपने ही देशवासियों (दलितों) को छोटी-छोटी बातों पर मार डालना व जला देना।

(14) मुर्गों की लड़ाई का खेल

मुर्गे एक ही जाति के होते हैं। आदमी उनको लड़ाकर खूब मजे लेता है। उनके खून निकलते देख आदमी ठहाका लगाता है। आजकल यही कुवर्ण (सवर्ण) लोग भी कर रहे हैं। उनके लिए दलित भी मुर्गे की तरह हैं। वे दलितों को पिछड़ों या मुसलमानों से लड़वा देते हैं। अधिकांश मुसलमान भी दलित हैं जिन्होंने

वर्षों पहले कुवर्णों के अत्याचारों से परेशान होकर इस्लाम धर्म कबूल कर लिया था। अज्ञानता के कारण दोनों मुर्गे एक दूसरे को मारते हैं और कुवर्ण खेल का मजा लूटते रहते हैं। यह सब “फूट डालो और राजनीति करो” नीति के तहत होता है।

(15) संस्कारों का विज्ञान

बच्चा बड़ों की नकल करके सीखता है। जैसा मां-बाप करते हैं वैसा ही बच्चा करता है। अगर बाप बीड़ी, सिगरेट् और शराब पीता है तो बच्चा भी बड़ा होकर वही करता है। बाप भी उसे रोक नहीं पाता। बड़ों व सम्मानित लोगों की गलत बातें भी लोग अच्छी तरह समझते हैं और उनसे सीख लेते हैं। इसी प्रकार जो देवी देवता या भगवान अपने जीवन में किया करते थे वह तो आदमी का आदर्श होता है। इसलिए विभिन्न धर्मों के लोग विभिन्न बातें सीखते हैं।

कुवर्ण (सवर्ण) कहते हैं कि वे दलितों से अपने संस्कारों के कारण श्रेष्ठ हैं। वैज्ञानिकों ने संस्कारों के बनने का अध्ययन किया तो पाया कि संस्कार धर्म से बनते हैं। धर्म धार्मिक पुस्तकों व भगवानों से बनता है। जैसे माता-पिता के गुण बच्चों में आ जाते हैं वैसे ही भगवानों के गुण भक्तों में आ जाते हैं। वैज्ञानिकों ने पाया कि हिंदू भगवानों और देवी देवताओं के जीवन चरित्र

जनता के मन पर अलग किस्म की छाप छोड़ते हैं जो कि इस प्रकार से है-

(1) श्री कृष्ण जी बचपन में चोरी किया करते थे और झूठ बोला करते थे इसलिए आजकल बच्चे भी चोरी करने और झूठ बोलने को बुरा नहीं समझते हैं। उनमें ये संस्कार बस जाते हैं।

(2) बड़े होकर श्री कृष्ण जी गोपियों को छेड़ा करते थे जिसको हिंदू लोग श्रद्धा से देखते हैं। हिंदू लड़कों में भी छेड़खानी को अच्छा समझने का संस्कार बचपन से ही पड़ जाता है।

(3) महाभारत से जुआ खेलने की प्रेरणा मिलती है और भाइयों में छोटी छोटी बातों के लिए झगड़ने के संस्कार पड़ जाते हैं।

(4) घर में महाभारत के दृश्य परिवार में वादविवाद को जन्म देते हैं क्योंकि ये हिंसा के प्रतीक हैं। ये चित्र अक्सर सास-बहू और भाई-भाई के बीच होने वाले झगड़ों का कारण बनते हैं। पिछले 20 वर्षों में भारत में हजारों औरतों की दहेज के कारण हत्यायें

हुई और सैकड़ों भाइयों ने अपने ही भाई या पिता की हत्या की। सर्वेक्षण में पता चला कि इन सभी के घरों में महाभारत के चित्र लगे हुए थे।

(5) भगवान श्री राम की पूजा करने वाला व्यक्ति, अपनी पत्नी पर बिना वजह शक करने लगता है जिससे घर में कटुता बढ़ती है।

(6) शिवजी की पूजा करने वाले व्यक्ति को नशे की लत जल्दी पड़ जाती है और आसानी से नहीं छूटती है। शिवजी को खुद गांजा, भांग आदि नशे की लत थी।

(7) भारत में सबसे ज्यादा लोग सरस्वती देवी की पूजा करते हैं फिर भी ज्यादातर लोग अनपढ़ हैं। विदेशों में कोई भी सरस्वती की पूजा नहीं करता फिर भी सभी लोग पढ़े लिखे हैं। मनुष्य का ज्ञान पढ़ने लिखने से बढ़ता है, सरस्वती जी की पूजा करने से नहीं।

(8) भारत पहले सोने की चिड़िया कहलाता था लेकिन जब से लोगों ने लक्ष्मी जी की पूजा करनी शुरु की तभी से भारत गरीब होना शुरू हो गया। पहले

मुस्लिम शासक यहां से सोना चांदी लूट कर ले गए। फिर अंग्रेज धन बटोर कर ले गए और आजकल बहुराष्ट्रीय कंपनियां पैसा बटोर कर ले जा रही हैं। जबकि लक्ष्मी जी की पूजा ना करने वाले देश अमीर होते चले जा रहे हैं। इस प्रकार कुवर्ण हिंदुओं के संस्कार अच्छे कैसे हो सकते हैं। अपने को अच्छा संस्कारी बताना ढोंग है।

(16) हिंदू धर्म का प्रसाद

बहुत से दलित आज भी हिंदू धर्म को श्रद्धा से अपनाए हुए हैं क्योंकि उन्हें हिंदू धर्म के प्रसाद का असली स्वाद पता नहीं है। जिस दिन उन्हें असलियत पता चलेगी, उसी दिन वे हिंदू धर्म छोड़ देंगे। हिंदू धर्म ने दलितों को समय-समय पर निम्नलिखित प्रसाद दिया है-

(1) हीनभावना का प्रसाद।

(2) सेवा और वफादारी के बदले घृणा का प्रसाद।

(3) उन्नति करने पर जलन का प्रसाद।

(4) तपस्या करने पर मौत का प्रसाद जैसे दलित शम्बूक ऋषि द्वारा तपस्या करने पर ब्राह्मणों ने श्रीराम से उसका गला कटवा दिया था।

(5) श्रद्धा दिखाने पर विकलांगता का प्रसाद जैसे द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अंगूठा काट लिया था क्योंकि वह आदिवासी था।

(6) बहन की बेइज्जती का बदला लेने पर मौत का प्रसाद जैसे रावण का वध जिसने राम से अपनी

बहन सूर्पनखा की बेइज्जती का बदला लेना चाहा था। रावण भी एक दलित था। वह यज्ञों में होने वाली बर्बादी का भी विरोध करता था।

(7) कुवर्णों (सवर्णों) में शादी करने पर अपमान, बहिष्कार और कभी कभी मौत का प्रसाद।

(8) साहित्य लिखने पर बेइज्जती का प्रसाद जैसे महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण लिखने पर उनके वंशजों को झाड़ू उपहार में दी गई और उन्हें गंदगी उठाने पर मजबूर किया गया।

(17) केकड़े की टांग

अगर कांच के एक खुले बर्तन में खूब सारे केकड़े रख दिए जायें तो ढक्कन ना होने के बावजूद कोई भी केकड़ा बाहर नहीं निकल पाता है। इसका कारण है कि जैसे ही कोई केकड़ा बाहर निकलने की कोशिश करता है, दूसरा केकड़ा उसकी टांग पकड़कर नीचे खींच देता है। हिंदू धर्म इसी प्रकार के केकड़ों से भरा है। इनमें सबसे खतरनाक केकड़ा ब्राह्मण है जोकि बाकी केकड़ों की उन्नति नहीं होने देता और टांग पकड़ पकड़ कर नीचे खींचता रहता है। ब्राह्मणों की केकड़ा नीति के कुछ उदाहरण इस प्रकार से हैं -

केकड़ा नीति
हम तो डूबेंगें...., तुम्हें भी ले डूबेगें।

(1) जब क्षत्रिय लोगों ने आगे बढ़ने की कोशिश की तो परशुराम ब्राह्मण ने उनका 21 बार कत्लेआम किया। परशुराम था कि पूरा हिटलर। आजकल भी फिल्मों में ठाकुरो को बुरा दिखाया जाता है जबकि बुराई की असली जड़ ब्राह्मणवाद है।

(2) वैश्य या बनियों का भी ब्राह्मणों द्वारा सार्वजनिक रूप से उपहास किया जाता है। कहा जाता है कि **"बनिया अपने बाप का भी नहीं होता।"** इसका मतलब यह है कि व्यापार के मामले में बनिया समुदाय के लोग अपने बाप को भी धोखा दे देते हैं|

(3) कायस्थ लोग जब अपनी बुद्धिमता से आगे बढ़ने लगे तो उनको बदनाम करने के लिए उनके बारे में कहावत बना दी - **"कायस्थ का बच्चा, कभी न सच्चा, जो सच्चा वो हरामी का बच्चा।"** कायस्थों के बारे में इससे ज्यादा जलील बात और क्या हो सकती है|

(4) पंजाबी खत्री बहुत कुशल व्यापारी होते हैं पर उनको भी दगाबाज और धोखेबाज बताया गया है। कहावत है- **"खत्री पुत्रम, कभी ना मित्रम, जब**

मित्रम, तब दगा ही दगा।" यानी कि खत्री को मित्र बनाने पर वह धोखा ही देगा।

(5) भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से लौटे शरणार्थियों को भी ब्राह्मणों ने नहीं बक्शा। सिंधियों के बारे में कहा गया कि अगर सिंधी और सांप एक साथ दिखाई दे तो पहले सिंधी को मारो फिर सांप को यानी कि सिंधी ज्यादा खतरनाक हैं।

(6) जाट लोग जब अपनी मेहनत से समृद्ध बन गए तो उनके बारे में कहावत बना दी कि **"जाट मरा तब जानिए, जब तेरहवी हो जाए।"** ये उनकी अच्छाई के लिए नहीं बल्कि उनका उपहास उड़ाने के लिए है अगर अच्छाई के लिए है तो ब्राह्मणों ने उसे अपने लिए क्यों नहीं बनाया।

(7) यादव समुदाय के लालू प्रसाद की सत्ता ब्राह्मणवादियों को पसंद नहीं है इसलिए उसको बार बार जेल भिजवा कर अपमानित किया गया। दूसरी और सुखराम जो कि ब्राह्मण संचार मंत्री था उसको ना तो इतनी बार जेल भेजा गया और ना ही बदनाम किया गया जबकि उसके बिस्तर से

भ्रष्टाचार की कमाई के करोड़ों रुपए मिले थे। इसके लिए पत्रकार भी कम दोषी नहीं, वे बहुजन के दोषों को माइक्रोस्कोप लगा कर देखते हैं और उसका दुष्प्रचार करते हैं।

(8) पिछड़ों के बारे में कहावत बना दी कि **"अहीर, गड़रिया, पासी, ये तीनों सत्यानाशी।"** अहीरों को नालायक बताया गया और कहा गया कि **"अहीर मिताई तब करें, जब सबैं जाति मर जाए।"** यानी कि अहीर मित्रता के लायक नहीं होते। उनसे मित्रता मजबूरी में ही करनी चाहिए, जब और सभी जातियों के लोग ना मिलें अर्थात मर गए हो।

(9) चमारों का नाम चोरी से जोड़ दिया गया जैसे कि **"चोरी-चमारी"**।

(10) सिख लोग जब देश विदेशों में फैल गए और अपनी मेहनत से धनी होने लगे तो ब्राह्मणों को जलन होने लगी, उन्होंने सिखों के बारे में उल्टे-सीधे चुटकुले बनाकर उनका मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। जिसके कारण ज्यादातर लोग सरदारों को देखकर मजाक की वस्तु समझते हैं।

(11) ईसाइयों के बारे में ब्राह्मण ज्यादा कुछ नहीं कह पाते क्योंकि इनके बच्चे उनके कॉन्वेंट स्कूलों में पढ़ते हैं और छोटी सी घटना होते ही उनके ऊपर अमेरिका से दबाव आने लगता है। फिर भी आजकल ये लोग ईसाइयों के पीछे भी पड़ गये हैं।

(12) आश्चर्य की बात यह है कि ब्राह्मण के खिलाफ इस प्रकार की कोई कहावत नहीं है क्योंकि ब्राह्मण ही इनको बनाने वाला है। ब्राह्मण एक उस कहानीकार की तरह है जो तरह तरह की फिल्मों की कहानियां लिखता है पर खुद पर्दे के पीछे रहता है। आम आदमी फिल्म और उसके हीरो हीरोइन को तो याद रखता है पर उसके कहानीकार को भूल जाता है। वह फिल्म की कहानी से प्रेरणा लेता है पर उसे ध्यान ही नहीं रहता कि फिल्म की झूठी कहानी किसने लिखी है।

(18) जहरीले गुप्त षड्यंत्र

आजकल मुसलमानों के खिलाफ घृणा फैलाने का अभियान छिड़ा हुआ है। उनको सभी अधिकारों से वंचित करके अछूत बनाने की साजिश की जा रही है। दलितों को उनके खिलाफ युद्ध करने के लिए उकसाया जा रहा है। साथ ही दलितों व पिछड़ों के सारे हक छीनकर उनको आजादी से पहले की अवस्था में पहुंचाने का षड़यंत्र किया जा रहा है।

दलित, पिछड़ों व मुसलमानों को एक साथ मिलकर लड़ने की आवश्यकता है क्योंकि सबका दुश्मन एक ही है। अलग अलग लड़ने से बिखर जाएंगे और नष्ट हो जाएंगे। पर यह लड़ाई कानूनी और संविधान सम्मत ही होनी चाहिए।

(19) दलितों का क्रमिक विनाश

आजकल लगभग सभी पार्टियां दलित विरोधी हो गई है। इसका मुख्य कारण यह है कि इन सभी पार्टियों के मुखिया कुवर्ण (तथाकथित सवर्ण) जाति के ही हैं या उनके गुलाम हैं। कोई भी कुवर्ण जाति का व्यक्ति दलित वर्ग को गुलामी से मुक्ति नहीं देना चाहता है। उनको मुक्ति देने से उसका अपना अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। इसलिए शुरुआत में ही महात्मा गांधी ने डॉक्टर अंबेडकर के कम्युनल अवार्ड का जमकर विरोध किया था। कांग्रेस सरकार ने दलितों के वोट बैंक पर कब्जा बनाए रखने के लिए उनको तरह-तरह की लुभावनी योजनाओं में फंसा कर रखा पर वास्तव में उनकी मदद करने की कोशिश नहीं की। दलितों (अनुसूचित जाति, जनजाति) व पिछड़े वर्ग के लोगों के क्रमिक विनाश का कार्यक्रम निम्न प्रकार से किया जा रहा है-

(1) आरक्षण कम नही कर सकते तो आरक्षित सीटें ही घटा दो, आरक्षण खुद ही कम हो जायेगा - जब दलित समाज में पढ़े लिखे लोगों की संख्या बढ़ने लगी, वे नौकरियों में आने लगे और आरक्षित सीटें भरने लगी तो कुवर्ण चिंतित हो गये। उन्होंने ग्लोबलाइजेशन और प्राइवेटाइजेशन के नाम से सरकारी नौकरियों को कम कर दिया गया। प्राइवेट कंपनी में कोई आरक्षण नहीं होता। इस प्रकार से जब नौकरियां ही कम बचेंगी तो आरक्षण अपने आप ही कम हो जाएगा।

जब 1990 के दशक में पिछड़ी जाति वालों का भी आरक्षण हो गया तो इन लोगों की चिंता और अधिक बढ़ गई। बहुजन की संख्या 85% होने के आरक्षण भी उतना ही देना पड़ता। इसको काटने के लिये कुवर्णों ने कोर्ट के माध्यम से कहला दिया कि 50% से अधिक आरक्षण नहीं होना चाहिए क्योंकि

इतना अधिक आरक्षण प्रशासन की दक्षता को कम कर देगा। वास्तव में ऐसा निर्णय न्यायसंगत नही है और बहुजनों के खिलाफ है। आज अगर देखा जाए तो तमिलनाडु में करीब 70% आरक्षण है पर वह भारत में दूसरा सबसे ज्यादा समृद्ध (आर्थिक रूप से) प्रदेश है और उसमें हर तरह का विकास भी बहुत ज्यादा हुआ है। जबकि कोर्ट के निर्णय के अनुसार उसको सबसे फिसड्डी होना चाहिए था।

न्यायाधीशों की भर्ती में आरक्षण न होने के कारण बहुजन वर्ग के लोग न्यायाधीश नहीं बन पाते हैं जिससे उनको न्याय नही मिल पाता है।

(2) आरक्षण में प्रमोशन को खत्म करना - कुवर्णों की चिंता उस समय और बढ़ गई जब उत्तर प्रदेश में राजनीतिक कौशल के आधार पर बसपा की सरकार बन गई। मुख्यमंत्री के पद पर कोई भी आरक्षण नहीं था फिर भी किसी दलित महिला का मुख्यमंत्री बन जाना किसी को भी नहीं भाया। कहा जाता है कि प्रधानमंत्री पद का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर जाता है। इस

सम्भावना को महसूस कर के कांग्रेस ने भी दलितों और पिछड़ी जातियों का खुलकर विरोध शुरु कर दिया (पहले यह विरोध छिप कर होता था)। आरक्षण में प्रमोशन को खत्म कर दिया गया। जिससे लाखों लोगों की पदावन्नति (Reversion) हो गयी। लोग बाबू से चपरासी बन गये। कांग्रेस ने प्रमोशन के बिल को पास नहीं किया जबकि राज्यसभा में इसको पास किया जा चुका था। उसके बाद भाजपा ने भी इस बिल को लोकसभा में बहुमत होने के बावजूद पास नहीं किया। यह सब इन पार्टियों के असली इरादों को बतलाता है।

आमतौर पर आरक्षण सीधी भर्ती वाले पदों पर ही दिया जाता है और उससे ऊंचे पदों पर प्रमोशन द्वारा ही पहुंचा जा सकता है। अगर सीधी भर्ती के पद पर भर्ती होने वाले व्यक्ति का प्रमोशन नहीं होगा तो वह सीधी भर्ती वाला पद खाली ही नहीं होगा। इससे आरक्षण अपने आप ही बंद हो जाएगा।

(3) बहुजनों को शिक्षा विहीन बना दो - अगर शिक्षा का स्तर घटा दिया जाये और शिक्षा के अवसर कम कर

दिये जायें तो पढ़े-लिखे और योग्य लोगों की संख्या में कमी आ जायेगी और अच्छी नौकरियों की मांग अपने आप घट जायेगी। इसके लिये निम्नलिखित काण्ड किये गये हैं -

(i) केंद्र सरकार ने एससी/एसटी के शोधार्थियों की यूजीसी से मिलने वाली छात्रवृत्ति बंद कर दी है ताकि आरक्षित वर्ग के शोधार्थी आसानी से पीएचडी की डिग्री हासिल ना कर सकें।

(ii) केंद्र सरकार ने बीएड प्रवेश परीक्षा में भी आरक्षण खत्म कर दिया है।

(iii) केंद्र सरकार ने 2016 में सीबीएसई से जाति आधारित दसवीं-बारहवीं के परीक्षा परिणाम घोषित करवाये यानी कि अब परीक्षार्थियों की कॉपियां जातिगत आधार पर जाँचकर बहुजनों के परीक्षार्थियों को कम नंबर दिये जाएंगे।

(iv) स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में प्रवेश (Admission) में और शुल्क (Fees) में छूट को भी खत्म किया जा रहा है।

(4) दलितों, बहुजनों का इतिहास खत्म कर दो तो ये लड़ना भूल जायेंगे- डॉक्टर अंबेडकर ने कहा था जो कौम अपना इतिहास नहीं जानती, वह कौम कभी भी इतिहास नहीं बना सकती। पर आजकल बहुजनों के आधुनिक इतिहास को ही खत्म करना शुरू कर दिया गया है। सरकार ने बाबा साहब से संबंधित अध्यायों को सीबीएसई के पाठ्यक्रमों (Syllabus) में से हटा दिया है ताकि आगामी पीढ़ियां बाबा साहब और उनके ऐतिहासिक कामों के बारे में ना जान सकें। बाबा साहब की प्रतिमाओं को भी खंडित करने का अभियान सा चलाया जा रहा है।

बहुजन की हालत सहनशील मेंढक जैसी- वैज्ञानिकों ने मेंढक की सहनशीलता के ऊपर एक प्रयोग किया था। मेंढक बड़े परिवर्तन को तो महसूस कर लेता है और अपने आप को बचा लेता है, परन्तु धीरे धीरे हुए

पानी को एकदम उबालने से मेंढक कूदकर भाग जाते हैं

परिवर्तन को महसूस नही कर पाता और मर जाता है।

वैज्ञानिकों ने मेंढक को एक गर्म पानी के बर्तन में डाल दिया तो वह तुरन्त कूद कर बाहर आ गया।

इसके बाद उन्होंने मेंढक को ठंडे पानी वाले बर्तन में डाला। मेंढक ने कोई प्रतिक्रिया नही की, वह आराम से पानी में ही रहा। फिर उन्होंने पानी को धीरे-धीरे गरम करना शुरू किया गया। मेंढक अपने शरीर को उस गरम पानी के अनुकूल ही बनाता गया। इस प्रकार से उसको पानी की बढ़ती हुई गर्मी महसूस नहीं हुई। पर जब पानी उबलने लगा तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मेढ़क चाह कर भी पानी से बाहर नहीं निकल पाया और उसने प्राण त्याग दिये। इसी प्रकार से बहुजन समाज की तुलना ऐसे ही मेंढक से की जा सकती है जोकि अपने खिलाफ हुए परिवर्तन को झेलते जा रहे हैं और कोई प्रतिरोध नहीं कर रहे हैं। उनका कुछ समय बाद पूर्ण विनाश निश्चित है यानी कि उनको उनके सारे संवैधानिक अधिकारों से वंचित कर दिया जाएगा। संविधान को निष्क्रिय बना दिया जाएगा। उनको पहले की तरह ही

गुलाम जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया जाएगा, उनकी अगली पीढ़ियां नरक का जीवन व्यतीत करेंगी।

अगर बहुजन संघर्ष नहीं करेंगे और मेंढक की तरह अपने खिलाफ हो रहे परिवर्तन को सहन करते रहेंगे तो वे अपनी आने वाली पीढ़ियों के साथ बहुत अन्याय करेंगे।

(1) प्राइवेटाईजेशन करके सरकारी नौकरियां कम करना। ना नौकरी होगी ना आरक्षण देना पड़ेगा।

(2) प्रोमोशन में आरक्षण खत्म करना। ना प्रोमोशन होगा, ना नीचे वाले पद खाली होगें ना नयी भर्ती होगी।

(3) आरक्षण पूर्ण रूप से खत्म करना। संविधान रद्द करना। मनुवाद का आरम्भ।

(20) आंख वाले अंधे

भारत में डेढ़ करोड़ असली अंधे हैं और 120 करोड़ आंख होते हुए भी अंधे हैं। उनकी आंखों में अंधेपन की पट्टी बंधी हुई है। अंधेपन की पट्टी गीता का उपदेश है कि कर्म करो पर फल की आशा मत करो यानी कि फल किसी और को खाने दो। इसी उपदेश के कारण आज 85 % जनता की कमाई पर 15% लोग ऐश कर रहे हैं।

यह तो वही हुआ कि फसल आप बोयें, काट कर कोई और ले जाए। रोटी आप पकाएं, खा कोई और जाए। शादी आप करें, बीवी कोई और ले जाए। क्या यह सही है ? हरगिज नहीं। इसलिए कर्म करो और फल भी खाओ। फल किसी दूसरे को मत ले जाने दो। अगर यही जागृति सब में आ जाए और वे अपना हक समझने लगे तो उनकी स्थिति में बहुत अधिक सुधार आ जाएगा।

(21) मधुमक्खी से सीख

मधुमक्खी बड़ी मेहनत से शहद इकट्ठा करती हैं और यदि कोई उनका शहद छीनने की कोशिश करें तो शहद को बचाने के लिए अपनी जान की बाजी भी लगा देती हैं। वे गीता के इस उपदेश को नहीं मानती कि शहद बनाओ पर उसे खाने की इच्छा मत रखो। शहद आदमियों को खाने के लिए दे दो। इसलिए दलितों, बहुजनों को भी मधुमक्खियों से सीख लेनी चाहिए और अपनी मेहनत की कमाई दूसरों को नहीं खाने देना चाहिए।

(22) पक्षियों का सुख

चिड़ियों की कोई सरकार नहीं होती। उनके लिए कोई विकास योजना नहीं होती। फिर भी वे स्वतंत्र व सुखी जीवन बिताती हैं। हमेशा चहकती रहती है। हां, अगर वे मंदिरों में पैसे चढ़ाने लगें और ब्राह्मणों को खाना खिलाने लगें तो दलितों की तरह गरीब हो जायेंगी। इससे स्पष्ट है कि दलितों की आधी गरीबी अंधविश्वास के कारण है।

(23) परिवर्तन या पतन

अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि भ्रामनवाद (ब्राह्मणवाद) के भ्रम के जाल को बौद्ध धर्म की बुद्धि (तर्क) का चाकू ही काट सकता है। बौद्ध धर्म ही दलितों, बहुजनों को ब्राह्मणवाद की गुलामी से मुक्ति दिला सकता है। हाथी भी बुद्ध के उपदेशों पर चलकर ही आजाद हो पाया था पर जैसे ही वह बुद्ध को भूला फिर से गुलाम हो गया था। डॉ० अम्बेडकर ने उनको फिर से बौद्ध धर्म का रास्ता दिखाया है। आज दलित इस बात को समझ गए हैं। भारत में तीन प्रकार के दलित लोग हैं-

(1) तेज दिमाग वाले जिनको गुलामी बिल्कुल सहन नहीं है। ये लोग मन से पूर्ण बौद्ध हो चुके हैं, उन्हें बस घोषणा भर करनी है जो वे बहुत जल्दी ही कर देंगे।

(2) मध्यम दिमाग वाले जो बौद्ध धर्म से पूरी तरह सहमत हैं पर दुविधा में रहते हैं। थोड़ा सा सही

नेतृत्व व जानकारी मिलते ही वे बौद्ध धर्म अपना लेंगे।

(3) कम दिमाग वाले जो ढोंग और अंधविश्वास को समझ नहीं पाते हैं और इन्हें छोड़ने में दिक्कत महसूस करते हैं। ये कहते हैं कि हम हिंदू धर्म में रहकर ही संघर्ष करेंगे। इनको यदि अंधविश्वास की असलियत बता दी जाए तो ये भी तुरंत बौद्ध धर्म अपना देंगे। आजकल लोगों का रुझान बहुत तेजी से बौद्ध धर्म की तरफ बढ़ रहा है जिसके निम्नलिखित कारण हैं -

(1) बौद्ध धर्म सबसे प्राचीन और ऐतिहासिक धर्म है।

(2) यह बुद्धिमानों का धर्म है और बुद्धि (तर्क) पर आधारित है।

(3) यह वैज्ञानिक धर्म है जिसके कारण चीन और जापान जैसे देश बौद्ध देश बहुत उन्नति कर गए हैं।

(4) सम्राट अशोक के समय बौद्ध धर्म पूरे भारत और श्रीलंका में फैल गया था।

(5) प्राचीन भारत में बुद्ध की इतनी मूर्तियां थी कि मुसलमान मूर्ति को ही बुत (बुद्ध) कहने लगे।

(6) एक प्रदेश में इतने ज्यादा बुद्ध विहार थे कि उसका नाम ही बिहार पड़ गया।

(7) बौद्ध धर्म जब भारत से लुप्त हुआ तो देश गुलाम हो गया।

(8) भगवान बुद्ध की विशालतम मूर्ति को तालिबान ने जैसे ही तोड़ा, वह तबाह हो गया।

(9) बौद्ध धर्म अपनाने से व्यक्ति को एक लाख रुपए प्रतिवर्ष की बचत होती है क्योंकि बौद्ध होते ही वह शराब आदि पीना और हिंदू तीर्थों में जाना अपने आप छोड़ देता है।

(10) दलितों पर अत्याचार होने पर कहीं सुनवाई नहीं होती। यदि बौद्धों पर कोई अत्याचार हो तो उसकी आवाज पूरे विश्व में सुनाई देती है क्योंकि बौद्ध धर्म को मानने वाले कई देशों में हैं।

(11) प्रकृति में भी परिवर्तन होता रहता है। जो जीव परिवर्तन नहीं कर पाता वह समाप्त हो जाता है।

इसलिए बौद्ध धर्म को अपनाने का यह बहुत सुनहरा अवसर है। अगर आप बौद्ध धर्म अपना लेते हैं तो आप की पीढ़ी उन्नति करेगी, आप के मन से भय समाप्त हो जाएगा, आपको कोई मूर्ख नहीं बना पाएगा। लेकिन अगर आप हिंदू धर्म में ही रहते हैं तो सबसे निचले स्थान या चतुर्थ या शूद्र वर्ण में ही रहना पड़ेगा। आप हीन भावनाओं से ग्रस्त हो जाएंगे, आपके बच्चे भी हीन भावनाओं से ग्रस्त हो जाएंगे। आपका

बुद्धम् शरणम् गच्छामि।

परिवार ढोंग और अंधविश्वास में पड़ा रहेगा। उसमें आत्मविश्वास नहीं आ पाएगा और धीरे-धीरे सभी लोग फिर से कुवर्णों (सवर्णों) के गुलाम बन जाएंगे। इसलिए अब बस एक ही रास्ता बचा है - परिवर्तन या पतन, मर्जी आपकी।

(24) क्या करें

इस किताब को पढ़ने के बाद काफी चीजें स्पष्ट हो जाती हैं कि बहुजनों की वास्तविक स्थिति क्या है, उनकी कमजोर स्थिती और गुलामी का कारण क्या है, इन कारणों से कैसे मुक्ति पाई जा सकती है? गुलामी छोड़कर उन्नति करने के कुछ अचूक उपाय निम्न प्रकार से हैं-

(1) एक हो जाओ - हम सभी लोग बचपन से सीखते आए हैं कि एकता में शक्ति होती है। यह बात तब भी सही थी और अब भी सही है। पर एकता कैसे और किसके साथ करें। एकता सबसे पहले अपने परिवार में, फिर समाज में, फिर गांव और मोहल्ले में होनी चाहिए। लोगों से बातचीत करो, जहाँ तक हो सके जरुरतमंद की मदद करो। मदद केवल पैसों से ही नहीं होती, सही दिशा देने से भी हो सकती है। तभी लोग आप से जुड़ेंगे, आपका सम्मान करेंगे और एकता स्थापित होगी।

अगर आप दूसरों की मदद करोगे तभी दूसरे भी आपकी मदद के लिए आएंगे।

(2) मिलकर लड़ो - अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। संघर्ष के लिए एकता बहुत जरुरी चीज है। इसके लिये लोगों को इकट्ठा करना होगा और फिर मिलकर अन्याय के खिलाफ लड़ना होगा।

फिल्मों में दिखाया जाता है कि एक हीरो ही कई लोगों को उठाकर पटक देता है और विजयी होता है। पर सच्चाई में ऐसा नही होता। फिल्म बनाने वाले लोगों को गुमराह करते हैं ताकि जनता एक ना हो पाए और हीरो की तरह बनने की कोशिश करती रहे। वास्तविक जीवन में एक जबरदस्त घूसा पड़ने पर किसी भी आदमी का दिमाग सही हो जाता है और वह उठने की हालत में ही नही रहता। अमिताभ बच्चन को शूटिंग के दौरान मेज का एक कोना ही लगा था, वे आज तक उसका इलाज करा रहे हैं।

अपने हक को जानो और समझो। दूसरों को भी उनका हक बताओ और हक के लिए मिलकर लड़ो।

(3) पढ़ो और पढ़ाओ - बुद्धि ही मनुष्य जाति को जानवरों से श्रेष्ठ बनाती है। जो व्यक्ति अपनी बुद्धि का

इस्तेमाल नहीं करता, उसकी स्थिति जानवरों से बेहतर नहीं हो सकती और जानवर को गुलाम बनाना बहुत आसान होता है। पढ़ने से ही बुद्धि का विकास होता है, तर्क शक्ति का विकास होता है। मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत उसकी तर्क शक्ति ही होती है। इसलिये खुद पढ़ो और लोगों को पढ़ाओ। तर्क शक्ति का विकास करो। बहुत मेहनत करो, सबसे ज्यादा योग्य बनने की कोशिश करो। सब तरह की जानकारी रखने वाला व्यक्ति जागृत कहलाता है और ऐसे व्यक्ति को गुलाम बनाना बहुत मुश्किल काम होता है।

(4) डरना छोड़ दो - ज्ञान मनुष्य को मनुष्य बनाता है जबकि अंधविश्वास मनुष्य को जानवर बना देता है। शिक्षा मनुष्य को शिक्षित बना सकती है पर जागृत नही। जो व्यक्ति अंधविश्वास को छोड़ देता है और तर्कशील बन जाता है वही सबसे ज्यादा जागृत कहा जा सकता है। कुछ अशिक्षित व्यक्ति भी जागृत हो सकते हैं। जैसे कि कबीर दास अशिक्षित होते हुए भी जागृत

थे। इस सिद्धान्त पर पूरे के पूरे अशिक्षित गांव को भी जागृत किया जा सकता है।

अंधविश्वास से मुक्त जागृत व्यक्ति किसी भी प्रकार के डर से मुक्त हो जाता है। उदाहरण के लिए पहले लोग चन्द्रमा को देवता समझते थे क्योंकि उनको जानकारी नही थी। अब वे समझ गये हैं कि चन्द्रमा भी पृथ्वी की तरह मिट्टी का बना एक ग्रह है, वह देवता नही है। इस प्रकार ज्यों-ज्यों ज्ञान बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों व्यक्ति के मन का डर कम होता जाता है।

डर से कोई व्यक्ति उन्नति नही कर सकता लेकिन डर से मुक्ति होने पर उसका दिमाग पूरी तरह से काम करने लगता है और वह बहुत उन्नति करने लगता है।

(5) गुलामी की बेड़ियां काट डालो - अब यह स्पष्ट हो गया है, दलितों और बहुजनों को हिन्दू धर्म के जाल में फंसा कर शोषण किया जा रहा है। यह शोषण तब तक जारी रहेगा, जब तक कि इस धर्म के जाल को तोड़कर बाहर नही निकला जाता। इससे निकलने के बाद बौद्ध धर्म जैसे मानव धर्म को अपनाना बहुत जरूरी है। इससे

मन स्वतंत्र होगा और गुलामी से पूर्ण रूप से मुक्त भी हो जाएगा। बौद्ध धर्म अपनाने से मनुष्य सर्वाधिक बुद्धिशाली व शक्तिशाली बन जायेगा और भारत जापान की तरह (जहाँ बौद्ध धर्म है) एक सर्वाधिक प्रगतिशील देश।

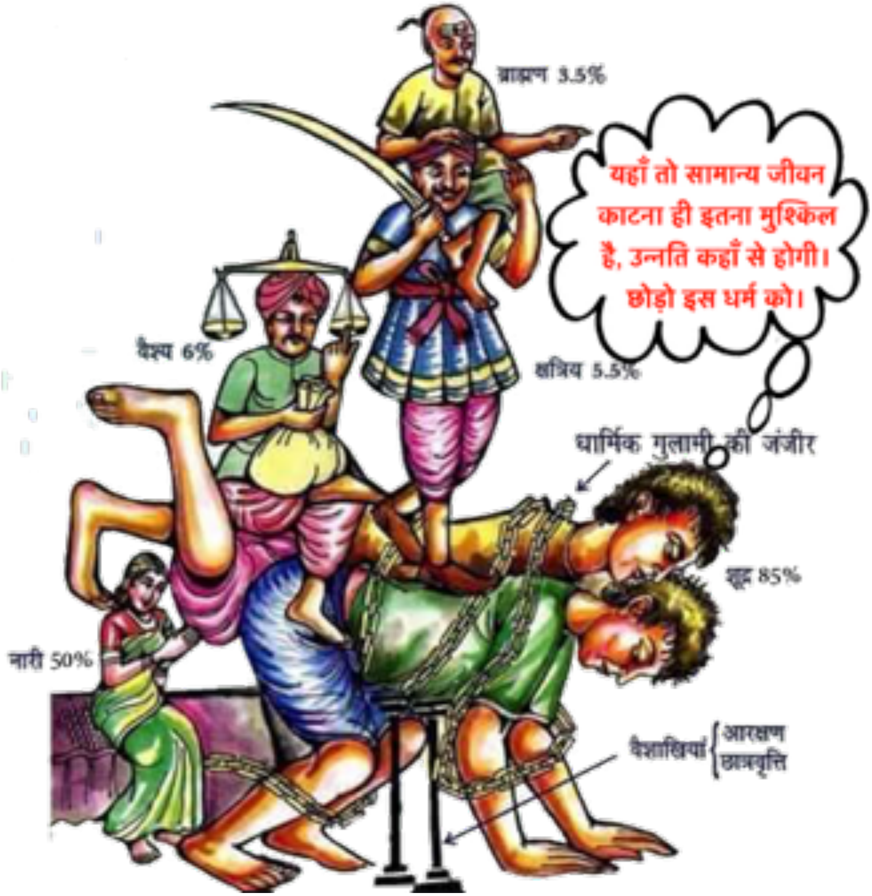

(25) चेतावनी

यह पुस्तक तर्क पर आधारित है और दलितों, पिछड़े वर्गों और मानवता के हित के लिए लिखी गई है। यह उनके लिए अमृत की एक बूंद साबित हो रही है। अब तक करीब 2 करोड़ 70 लाख लोग इस पुस्तक से लाभ उठा चुके हैं। उनका जीवन पूर्ण रूप से बदल चुका है।

हर वर्ण और जाति में कुछ अच्छे और कुछ बुरे लोग जरूर होते हैं। इस पुस्तक में उन दुर्गुणों की आलोचना की गयी है जो कि देश की एकता और अखंडता के लिए खतरा हैं और मानवता के लिए कलंक हैं। इसे किसी जाति, समूह या धर्म की आलोचना के रूप में न लिया जाये। इस संसार में मनुष्य की केवल एक ही जाति और धर्म है - मानव जाति और मानव धर्म, बाकी सब बाद में बनाई गयी हैं। जो भी लोग इस मानव जाति को अपने स्वार्थ के लिए विभाजित करना चाहते, वे बहुत बड़ा अपराध कर रहे हैं, उनको सुधर जाना चाहिए।

अगर कोई भी व्यक्ति इस पवित्र पुस्तक की कुतर्कों द्वारा आलोचना करेगा तो उसके परिवार का 3 साल के अंदर सर्वनाश हो जाएगा। अतः ऐसी गलती ना करें।

- बेधड़क बादशाह